Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 7 | ISSUE : 2 | FEBRUARY 2021

भारत में 'बौद्ध विरासत स्थल' : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ अरुण कुमार शहैरिया [1]

[1] सह आचार्य, भूगोल, डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

भारत की लगभग पांच हजार वर्ष पुरानी सभ्यता एवं संस्कृति का विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में महत्वपूर्ण स्थान है। भारत की विशाल संस्कृति एवं ऐतिहासिक विरासत को देखते हुए ही आज भारत विश्व के प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में विख्यात हो रहा है। भारत के प्राचीन ऐतिहासिक नामों के अवशेष अजन्ता, ऐलोरा, खजुराहों की अवर्णनीय कलाकृतियाँ, दक्षिण भारत के भव्य कलात्मक मंदिर, ऐतिहासिक किले. ताजमहल तथा अन्य मुगलकालीन स्मारक देश की ऐसी विरासतें हैं जिन्हें देखने के लिए विश्व के अन्य देशों से प्रति वर्ष लाखों पर्यटक भारत खिंचे चले आते हैं। एक आकलन के अनुसार केवल आगरा में ताजमहल देखने के लिए हर वर्ष लगभग चार लाख पर्यटक आते हैं जिसमें 40 प्रतिशत से अधिक विदेशी होते हैं।

देश में पर्यटन के विस्तार तथा विदेशी शैलानियों को अधिक से अधिक संख्या में भारत आने के लिए आकर्षित करने हेतु पर्यटन मंत्रालय तथा भारतीय पर्यटन विकास विभाग द्वारा नयी-नयी योजनायें शुरू की जाती रही हैं। 'अतिथि देवो भव' तथा 'प्रियदर्शिनी' नामक योजनायें इसी ध्येय से शुरू की गयी थीं। 'अतुल्य भारत' नामक नयी योजना के अन्तर्गत देश में स्थित ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक धरोहरों का विदेशों में प्रचार प्रसार किया जाता है। भारत में पर्यटन को प्रोत्साहन देने के लिए देश के सभी प्रमुख नगरों में पर्यटन कार्यालय, टूरिस्ट लॉज तथा होटलों की स्थापना पर्यटन निगम द्वारा की गयी है। उ0प्र0 सरकार द्वारा प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ाने के लिए 'बौद्ध परिपथ' नामक योजना की शुरूआत एक दशक पूर्व की गयी थी। इसके अन्तर्गत बौद्धकालीन स्थलों का विकास किया गया था। 'बौद्ध विरासत' स्थलों का सम्बन्ध गौतम बुद्ध तथा उनके दार्शनिक विचारों से है। जहाँ-जहाँ पर भगवान बुद्ध गये या उन्होंने उपदेश दिये या जहाँ के राजा उनके विचारों से प्रभावित हुए वहाँ वहाँ पर बौद्ध विरासती स्थल देखने को मिलते हैं। आज भारत में बहुत बड़े पैमाने पर संरक्षण प्रदान कर उन्हें पर्यटन के क्षेत्र में विकसित किया जा रहा है और ये बौद्ध विरासत लगातार पर्यटन विकास में सहायक होते दृष्टिगोचर हो रहे हैं तथा राष्ट्र की सामाजिक-आर्थिक उन्नति में वृद्धि कर रहे हैं।

KEYWORDS:

विरासत, पर्यटन, स्थल, विचार, भगवान बुद्ध, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धरोहर.

मुख्य अध्ययन श्रृंखला

किसी भी देश के भौगोलिक अध्ययन में उसकी भूवैज्ञानिक संरचना का ज्ञान आधारभूत होता है। शैलों की संरचना का प्रभाव देश की मिट्टियों तथा खनिज संसाधनों पर प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है इसीलिए देश की कृषि, औद्योगिक विकास एवं आर्थिक प्रगति भी परोक्ष रूप से शैलों की भू-वैज्ञानिक संरचना पर निर्भर करती है।

भारत का भू-वैज्ञानिक इतिहास कुल भूपटल के भू-वैज्ञानिक इतिहास के समान प्राचीन है। यहाँ पुराकैम्ब्रियन युग की प्राचीनतम शैलों से लेकर क्वाटरनरी युग की नवीनतम शैलें पायी जाती हैं। भू-वैज्ञानिक विशेषताओं के आधार पर भारत को तीन स्पष्ट वृहत भागों में बाँटा जा सकता है- (i) प्रायद्वीपीय भारत, जो प्राचीनतम शैलों से निर्मित गोंडवाना लैण्ड का अंग है, (ii) हिमालय तथा नवीन वलित पर्वत श्रेणियाँ जो सागरों में निक्षेपित नवीन अवसादी शैलों से निर्मित हैं तथा (iii) उपरोक्त दोनों भूखण्डों के निर्माण के पश्चात दोनों के मध्य गंगा-सिन्धु-ब्रह्मपुत्र का मैदान नवीन जलोढ़ के निक्षेपों से उत्पन्न हुआ।

स्थिति और विस्तार की दृष्टि से यदि देखा जाए तो भारत की आकृति चतुष्कोणीय है। यह विषुवत रेखा के उत्तर में 8°4' से 37°6' उत्तरी अक्षांशों तथा 68°7' से 97°25' पूर्वी देशान्तरों के मध्य विस्तृत है। कर्क रेखा (23.5° उत्तर) तथा 82°30' पूर्वी देशान्तर देश के लगभग मध्य से गुजरती है। देश का उत्तर-दक्षिणी विस्तार 3,214 कि०मी० तथा पूर्व-पश्चिम विस्तार 2,933 कि०मी० है। इसकी स्थलीय सीमा 15200 कि०मी० तथा मुख्य स्थल की समुद्री सीमा 6100 कि0मी0 लम्बी है। इसका क्षेत्रफल 32,87,782 वर्ग कि०मी० है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व में सातवें स्थान पर तथा जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में दूसरे स्थान पर (चीन के बाद) है।

भारत के धरातलीय उच्चावच में विविधता दर्शनीय है। जिसको कुल चार भौतिक विभागों में बांटा जा सकता है- (0) उत्तर पर्वतीय प्रदेश, (ii) विशाल मैदान अथवा सतलज गंगा ब्रहमपुत्र का मैदान, (iii) प्रायद्वीपीय पठार एवं (iv) तटीय मैदान एवं द्वीप।

ऐतिहासिक दृष्टि से भारत एक प्राचीन देश है जिसकी सभ्यता एवं संस्कृति पांच हजार वर्षो से अधिक पुरानी है। वस्तुतः मध्य तथा दक्षिणी भारत में अनेक स्थानों पर पुरातात्विक उत्खनन से पाषाणकालीन संस्कृति के विकसित होने का पता चला है। इसी प्रकार, नव पाषाण कालीन संस्कृति के चिन्ह उत्तर-पूर्व जम्मू कश्मीर, गंगाघाटी, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आन्ध्र प्रदेश में मिले हैं। 1921-22 में पुरातात्विक सर्वेक्षणों तथा उत्खननों से अविभाजित भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग में ताम्रयुगीन हड़प्पा संस्कृति के अस्तित्व का पता चला। भारतीय इतिहास में ऋग्वैदिक काल सबसे महत्वपूर्ण समय रहा है, जब आर्य लोग 'सप्त सिन्धु' प्रदेश में स्थापित हुए और उन्होंने इस प्रदेश को 'ब्रह्मवर्त नाम दिया। रोमवासियों ने इस नदी को इण्डस तथा इसके समीपवर्ती देश को इण्डिया नाम दिया। ईरानी लोग इस नदी को "हिन्दू (सिन्धु) तथा इस देश को हिन्दुस्तान कहते थे आर्य लोग सिन्धु बेसिन क्षेत्र में लगभग 2000 ई०पू० में स्थापित हुए तथा उन्होंने इस प्रदेश को सप्त सैन्धव' नाम दिया। बाद में उन्होंने अपनी प्रभुसत्ता का प्रसार पूर्व की ओर गंगा घाटी में किया तथा इस प्रदेश को ब्रह्मर्षि देश या ब्रह्मावर्त कहा। कालान्तर में वे लोग हिमालय से विन्ध्य पर्वत के मध्य विस्तृत सम्पूर्ण भूमि पर फैल गये तथा इस प्रदेश को उन्होंने आर्यावर्त नाम दिया। विन्ध्य पर्वत के दक्षिण में विस्तृत प्रदेश दक्षिणापथ कहलाया, जहाँ अनार्य या द्रविड़ लोग निवास करते थे। बहुत बाद में कश्मीर से कन्याकुमारी तक विस्तृत सम्पूर्ण प्रदेश भारत कहलाया, जिसका नामकरण मनु की वंशाली में ऋषभ के पुत्र 'भरत' के नाम पर हुआ।

इस प्रकार विभिन्न ऐतिहासिक उतार-चढ़ाव को स्वीकार करने वाले भारतवर्ष में अनेक महानायक हुए जिनमें बौद्ध धर्मावलंबी भगवान गौतम बुद्ध भी थे जिनके विचारों से यह भारतवर्ष निरंतर आप्लावित होता रहा। उनसे संबंधित स्थल बौद्ध विरासत के रूप में जाने गए। यह विरासत स्थल वह स्थान है जहां पर भगवान बुद्ध ने अपने उपदेश दिए और जहां से जनता ने उनके उपदेशों को ग्रहण कर ज्ञान की प्राप्ति की। भगवान बुद्ध के दार्शनिक विचारों से प्रभावित हुए राजा महाराजाओं ने उनके धर्म का अनुसरण करते हुए विभिन्न प्रकार के बौद्ध मठ, विहार, मंदिर, स्तूप आदि का निर्माण कराया जो बौद्ध विरासत के रूप में देखने को मिलते हैं। भगवान बुद्ध ने तकरीबन मौजूदा उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र की यात्राएं की थीं। भगवान बुद्ध ने 29 वर्ष की आयु में गृह त्याग दिया। बौद्ध ग्रन्थों में इस घटना को महाभिनिष्क्रमण' कहा गया है।

भारत में बौद्ध विरासत स्थल

यदि सम्पूर्ण वैश्विक स्वरूप पर दृष्टिपात किया जाय तो बौद्ध धर्म से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के स्थल दृष्टिगोचर होते हैं जिसमें मुख्य हैं-विहार, पगोडा, स्तूप, चैत्य, गुफा, बुद्ध मूर्ति व अन्य स्थल। ये समस्त स्थल विश्व के विभिन्न भागों में (ज्यादातर एशिया में) अपने अलग-अलग स्वरूप को परिलक्षित करते हैं और ये सभी स्थल भारत में भी अलग-अलग जगहों पर अपने अलग-अलग रूपों में दृष्टिगत होते हैं। भारत में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित स्थल कहीं पर चैत्य के रूप में, कहीं पर बिहार के रूप में तो कहीं पर गुफा के. स्वरूप में और कहीं पर यह बुद्ध मूर्ति के रूप में भी दृष्टिगत होते हैं। भारत में बौद्ध धर्म से सम्बन्धित ये सभी स्थल बुद्ध जी के जीवन व बौद्धधर्म से सम्बन्धित उनसे जुड़े अनेक प्रकार के महत्व को प्रचारित करते हैं। भारत में स्थित इन सभी स्थलों को हम उनके महत्व उत्पत्ति और वैविध्य के अनुसार निम्न रूपों में विभक्त कर सकते हैं-

चार मुख्य स्थल लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर।

चार अन्य स्थल- श्रावस्ती, राजगीर, संकिसा, वैशाली।

अन्य स्थल—पटना-गया, कौशाम्बी-मथुरा, कपिलवस्तु देवदहा,

केसरिया – पावा, नालंदा-वाराणसी।

बाद के स्थल-सांची, रत्नागिरी, अजन्ता एलोरा।

इन समस्त स्थलों को यदि दृष्टिपात किया जाय तो भगवान बुद्ध के अनुयायियों के लिए विश्वभर में पांच प्रमुख तीर्थ मुख्य माने जाते हैं-

1. **लुम्बिनी**-यहाँ भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था।
2. **बोधगया** - यहाँ भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया था।
3. **सारनाथ**- यहाँ से भगवान बुद्ध ने दिव्य-ज्ञानोपदेश देना प्रारम्भ किया था।
4. **कुशीनगर** - यहाँ पर भगवान बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ।
5. **दीक्षा भूमि**- यहाँ से भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान हुआ।

लुम्बिनी –

लुम्बिनी स्थान नेपाल की तराई में नौतनवा रेलवे स्टेशन से 25 किलोमीटर और गोरखपुर गोंडा लाइन के नौगढ़ स्टेशन से लगभग

12 किलोमीटर दूर है। वर्तमान में यह स्थल नौगढ़ से पक्की सड़क मार्ग से भी जुड़ गया है। ईसा पूर्व 563 में राजकुमार सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) जी का जन्म इसी स्थान पर हुआ था। प्राचीन विहार के नष्ट हो जाने के बाद केवल सम्राट अशोक का एक स्तंभ अवशेष के रूप में इस बात की घोषणा करता है कि यहां पर भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था।

बोधगया –

बोधगया बिहार राज्य की राजधानी पटना के दक्षिण पूर्व में लगभग 100 किलोमीटर दूर स्थित गया जिले से सटा हुआ एक छोटा सा शहर है। यही वह स्थन है जहां पर भगवान बुद्ध जी ने बोधि वृक्ष के नीचे

बैठकर तपस्या की थी और उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई थी, यह स्थल तभी से बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वर्ष 2002 में यूनेस्को द्वारा इस शहर को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया।

सारनाथ

काशी अथवा वाराणसी से10 किलोमीटर पूर्वोत्तर में स्थित प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थल है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात भगवान बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश यहीं पर दिया था जिसे 'धर्मचक्रप्रवर्तन' का नाम दिया जाता है और जो कि बौद्ध मत के प्रचार प्रसार का आरम्भ भी माना जाता है। यह स्थान बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थों में से एक है (अन्य तीन है-लुम्बिनी, बोधगया और कुशीनगर)। इसके साथ ही सारनाथ को जैन धर्म एवं हिन्दू धर्म में भी महत्व प्राप्त है।

सांची का स्तूप

सांची मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन जिले में वेतवा नदी के तट पर स्थित एक छोटा सा गांव है। यह भोपाल से 46. किलोमीटर पूर्वोत्तर में तथा बेसनगर और विदिशा से 10 किलोमीटर की दूरी पर मध्य प्रदेश के मध्यभाग में स्थित है यहाँ अनेक बौद्ध स्मारक हैं जो तीसरी शताब्दी

ई०पू० से बारहवीं शताब्दी के बीच के हैंसांची का महान मुख्य स्तूप मूलतः सम्राट अशोक महान ने तीसरी शताब्दी ई०पू० में बनवाया था। इसके केन्द्र में एक अर्द्धगोलाकार ईंट निर्मित ढांचा है जिसमें भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष रखे हुए हैं तथा इसके शिखर पर स्मारक के सम्मान के प्रतीक के रूप में एक छत्र भी है।

नालंदा

नालंदा भारत के बिहार राज्य का एक जिला है जो कि अपने प्राचीन इतिहास के लिए विश्व प्रसिद्ध है, जहाँ पर सबसे पुराने नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष आज भी मौजूद हैं। माना जाता है कि बुद्ध और महावीर कई बार नालंदा में ठहरे थे बुद्ध के प्रमुख शिष्यों में से एक 'शारिपुत्र का जन्म नालन्दा में हुआ था। "विश्व के प्राचीनतम विश्वविद्यालय के अवशेषों को अपने आंचल में समेटे नालंदा बिहार का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है।

संकिसा

संकिसा भारत में उत्तर प्रदेश राज्य के फरुखाबाद जिले के पखना रेलवे स्टेशन से सात मील दूर काली नदी के तट पर बौद्ध धर्म स्थान है, इसका प्राचीन नाम संकाश्य' है। संकिसा नामक स्थान पर बना बौद्ध स्तूप दुनिया के प्राचीनतम स्तूपों में से एक है। संकिसा की ख्याति इसी बौद्ध स्तूप से है। इसके बारे में एक बहुत रोचक कथा है कि भगवान बुद्ध की माता महामाया ने स्वर्ग में उनसे धर्मोपदेश लेना चाहा तो बुद्ध स्वर्ग गये। तीन माह उपदेश देने के पश्चात उन्होंने पृथ्वी पर जाने की इच्छा जतायी तो देवराज इन्द्र ने अपने योगबल से तीन बहुमूल्य सीढ़ियाँ प्रकट कीं जो क्रमशः बिलहौर, सोने और चांदी की थीं

जिसमें बुद्ध सोने वाली सीढ़ी से संकिसा में उतरे थे।

चीनी यात्री हवेनसांग लिखता है कि बुद्ध के उतरने के बाद वे सीढ़ियाँ कई शताब्दियों तक दिखाई देती रहीं और फिर लुप्त हो गयीं, जबकि फाहयान लिखता है कि ये सीढ़ियां बुद्ध के उतरने के बाद फौरन धंस गई और सिर्फ सप्तपद बचे रह गये जिन्हें कोई नहीं देख सकता। जो भी हो यह तो तय है कि बुद्ध का इस जगह से गहरा नाता रहा है।

श्रावस्ती

श्रावस्ती (प्राचीन श्रावस्ती), जो प्राचीन कोशल महाजनपद की राजधानी थी, एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल है। ऐसा माना जाता है कि भगवान बुद्ध और उनके शिष्य इस शहर में 24 साल रुके और उपदेश दिए।

ऐलोरा गुफाएँ

ऐलोरा गुफाएँ महाराष्ट्र में औरंगाबाद से 29 किलोमीटर तथा अजन्ता के कुछ ही दूरी पर स्थित हैं यहाँ से प्राप्त उत्कीर्ण शिलालेख के अनुसार समीप इसका प्राचीन नाम 'एलापुर अंचल' था कुछ लोग इसे वैरूल' नाम से अभिहित करते हैं व इसे ऐलोरा नाम से भी संबोधित किया जाता है। भारत में पूर्व मध्य काल में जो ख्याति अजन्ता की है वही ऐलोरा की

भी है।

सीधी खड़ी चट्टानों को काटकर ऐलोरा में लगभग 34 गुफा मंदिरों का निर्माण किया गया, उनमें 12 दक्षिणमुखी 'बौद्ध धर्म के मध्य के 17 हिन्दू धर्म के तथा उत्तरमुख के 5 जैन धर्म के हैं। यानि यहाँ बौद्ध, ब्राह्मण तथा जैन धर्मों की त्रिवेणी है और यह धर्म निरपेक्ष भावना का ज्वलंत उदाहरण है। इनमें गुफा संख्या 1 से 12 तक (बौद्ध धर्म की गुफाएँ) 350ई0 से 700ई0 तक उत्खनित हुई थीं।

अमरावती

शुंग-कुषाणकाल में दक्षिण भारत में गोदावरी और कृष्णा नदियों के बीच की कला शैली का प्रधान केन्द्र अमरावती था, जो आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र के विजयवाड़ा नामक स्थान पर स्थित है।

ईसा से लगभग 200 वर्ष पूर्व सातवाहनों के समय में आंध्र नरेशों द्वारा इस स्तूप का निर्माण महान व कर्मिक की देखरेख में पसानिक (पाषाणिक-संगतराश लोगों ने किया चैत्यक नामक बौद्ध भिक्षु पाटिलपुत्र, राजगृह, तमिलदेश, घण्टशाला, विजयवाड़ा आदि से आये थे और स्थानीय गृहपत्तियों, उपासकों, वाणीयजनों (वणिक) सार्थ राजलेखक आदि के दान से अमरावती स्तूप का निर्माण किया गया था। अमरावती स्तूप के अभिलेख मौर्यकालीन ब्राह्मी में पाये गये हैं। अमरावती स्तूप को प्रकाश में लाने का श्रेय अंग्रेज विद्वान 'कर्नल मैकेन्जी को है।

निष्कर्ष

भगवान बुद्ध से संबंधित विरासत स्थल ज्यादातर बिहार और उत्तर प्रदेश राज्य में देखने को मिलते हैं। साक्ष्यों के अभाव में बुद्ध की यात्रा या भ्रमण के बारे में तो कहा जाता है कि ये आधुनिक बिहार, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश व तेलंगाना राज्यों की यात्रा की थी, कुछ जगहों पर इनकी यात्रा में कश्मीर को भी शामिल किया जाता है और इससे भी आगे बढ़कर आधुनिक पेशावर क्षेत्र तक भी यात्रा वृतांत को बताया जाता है परन्तु इस मामले में भारत देश भाग्यशाली है कि इनके जीवन से जुड़े सर्वाधिक स्थल भारतीय क्षेत्र में ही विद्यमान हैं और इन स्थलों में वे स्थल जो बौद्धों के लिए सर्वाधिक महत्व रखते हैं वे सभी भारत में ही विद्यमान है। इस लिहाज से यदि बौद्ध विरासत स्थल की बात की जाय तो भारत में यह पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। इन स्थलों की एक विशेषता यह भी है कि यह उत्तर प्रदेश और बिहार के मैदानी भागों में अवस्थित है बाकी स्थल जो कि दुर्गम क्षेत्रों में अवस्थित है उनकी महत्ता बौद्ध धर्मावलम्बियों में उतनी नहीं देखी जाती है जितनी कि बोधगया, सारनाद कुशीनगर की है। यदि भारत में बौद्ध संस्कृति की छाप लिए अन्य स्थलों को देखा जाय तो इसमें मुख्यतया मठ, स्तूप व गुफा मंदिर सामने आते हैं। इनमें से कुछ स्तूप व गुफा मंदिर को छोड़ दिया जाय तो बाकी के स्थल क्षेत्र में दुर्गम क्षेत्रों में ही नजर आते हैं। मठों की बात की जाय तो लगभग सभी मठ क्षेत्र के ठण्डे प्रदेशों (सिक्किम, अरूणाचल, हिमांचल व कश्मीर) में ही दृष्टिगत होते हैं, जो कि भारतीय क्षेत्र के अनुसार देखा जाय तो लगभग सभी उत्तरी व उत्तर-पूर्वी छोर पर हैं, जबकि भारत की उत्तर-दक्षिण लम्बाई 3214 किमी0 है। इस दृष्टि से भारत का सम्पूर्ण दक्षिणी भाग मठों के स्वरूप से वंचित दिखता है जो कि पर्यटन (घरेलू पर्यटन) के दृष्टिकोण से अच्छा नहीं कहा जा सकता है। कारण यह है कि पर्यटन के इस स्वरूप में दूरी ज्यादा बढ़ जाती है जो कि अनेक समस्याओं को जन्म देती है। इसी क्रम में जो अन्य विरासत स्थल हैं उनमें ज्यादातर देश के आन्तरिक भाग में सीमित हैं, यह भी अन्य राज्यों से दूरियां स्थापित करते हैं। दूरियों के साथ-साथ ये सभी विरासत स्थल बहुत पहले के हैं जो कि (कुछ को छोड़कर) वर्तमान में अत्यधिक जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पहुंच चुके हैं और कुछ तो अपने अस्तित्व को ही बचा पाने में नहीं सफल हो सके, जैसे-संकिसा अमरावती व नागार्जुनकोण्ड। भौगोलिक दृष्टि से यदि देखा जाए तो इन सभी विरासत स्थलों पर सुरक्षा की दृष्टि से अत्यधिक कार्य करने की आवश्यकता है।

REFERENCES

1. गौतम, अल्का (2013), भारत का बृहद् भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ० 15.

2. तिवारी, आर०सी० (2014), भारत का भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, पृ0 02.

3. सिंह, भरत (2009), बुद्ध कालीन भारतीय भूगोल, पृ० 109.

4. गोयल, कुसुम (2014), सिद्धार्थ से गौतम बुद्ध, हिन्दी पाकेट बुक्स, नई दिल्ली, पृ0 01.

5. मित्रा, राजेन्द्र लाल (1878), 'बुद्धागया: द हरमिटेज ऑफ शाक्यामुनी' पब्लिस्ड अण्डर आर्डर ऑफ द गवर्नमेन्ट ऑफ बंगाल, पृ0 13.

6. सिंह, एस0एन0 (1984), ज्योआरेखी ऑफ टूरिज्म एण्ड रिक्रियेशन विथ स्पेशल रिफरेंस टू वाराणसी इण्ड, इण्डिया पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली, पृ० 60.

7. प्रताप, रीता (2009), भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पृ0 459.

8. गोस्वामी, प्रेमचन्द्र (1999), भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का संक्षिप्त इतिहास, जयपुर पृ० 135.